بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 17.02.2023 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

पेशगोई हज़रत मुस्लेह मौऊद के संदर्भ में सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ीयल्लाहु अन्हु के कुछ इलमी कारनामों पर ग़ैर अज़-जमाअत विद्वानों की अभिव्यक्तियों का बयान ।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 17 फ़रवरी 2023, स्थान मस्जिद मुबारक यइस्लामाबाद यू. के.।

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- जैसा कि प्रत्येक अहमदी जानता है कि 20 फ़रवरी का दिन जमाअत में पेशगोई (भविष्य वाणी) मुस्लेह मौऊद के हवाले से याद रखा जाता है। इस विषय पर जमाअतों में जलसे भी होते हैं। यह पेशगोई हज़रत मसीह मौऊद अलै. के हाँ एक बेटे के जन्म के विषय में थी जो अनेक गुणों का मालिक होगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने पेशगोई मुस्लेह मौऊद के शब्दों को पेश फ़रमाया तथा उसके बाद पेशगोई की अवधि के अन्दर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के जन्म और आप रज़ी. के इस पेशगोई की पुष्टि करने वाले होने का संक्षेप में वर्णन फ़रमाया।

हुज़र-ए-अनवर ने फ़रमाया कि इस समय मैं हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के इलमी तथा विभिन्न कारनामों में से कुछ का वर्णन करूँगा परन्तु इससे पहले यह बात सामने रहनी चाहिए कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. का बचपन स्वास्थय की दृष्टि से अति कमज़ोरी में व्यतीत हुआ था। सांसारिक दृष्टि से आप रज़ी. की शिक्षा न होने के बराबर थी। किन्तु चूँकि आप रज़ी. के उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी (प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष ज्ञान) से परिपूर्ण होने का वादा ख़ुदा की ओर से था इस लिए ख़ुदा तआला ने आप रज़ी. से बुद्धि को अचम्भित कर देने वाले सम्बोधन एवं भाषण करवाए। ऐसे ऐसे विषयों पर आप रज़ी. ने लिखा जो अपने उदाहरण आप हैं तथा ग़ैर भो इनकी सराहना करते हैं। आज इस हवाले से मैं कुछ हवाले पेश करूँगा परन्तु इससे पहले मैं आप रज़ी. की पुस्तकों, सम्बोधनों, विषयों, भाषणों तथा मजलिसे इरफ़ान इत्यादि की संख्या एवं आकार का एक अवलोकन पेश करता हूँ।

आप रज़ी. की जो पुस्तकें, सम्बोधन, लैक्चर्ज़, सन्देश तथा निबन्ध इत्यादि प्रकाशित हुए अथवा अब लगभग पूरे हो चुके हैं एवं प्रकाशित होने के लिए तय्यार हैं, जो अनवारुल उलूम के रूप में प्रकाशित होते हैं, उनकी कुल 38 जिल्दें बन जाएँगी और उनकी संख्या 1424 है। कुल पृष्ट लगभग

20340 जाएँगे। तफ़सीरे कबीर, तफ़सीरे सग़ीर तथा अन्य तफ़सीर की लिखित सामग्री के पृष्टों की संख्या 28735 है। 1808 जुम्अः के ख़ुत्बे, 51 ईदुलफ़ित्र के ख़ुत्बे, 42 ईदुलअज़हा के ख़ुत्बे, 150 निकाह के ख़ुत्बे, शूरा के सम्बोधन भाग-1 तथा 3 प्रकाशित हुए हैं इसके पृष्ट 2131 हैं। यदि समस्त पृष्टों को एकत्र किया जाए तो ये लगभग पछत्तर हज़ार पृष्ट बनते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने रिसर्च सैल के हवाले से ऐसे निबन्ध, भाषण तथा मजलिसे इरफ़ान का अवलोकन भी पेश फ़रमाया जो अभी तक प्रकाशित नहीं हुए। फ़रमाया कि यह एक विस्तृत इलमी भंडार है। इस समय मैं पहले आप रज़ी. के इलमी कारनामों में से क़ुर्आन करीम के अनुवाद तथा तफ़सीरों का कुछ परिचय तथा ग़ैर लोगों की कुछ समीक्षा पेश करता हूँ। तफ़सीरे कबीर में आप रज़ी. ने 59 सूरतों की तफ़सीर फ़रमाई है जो दस भागों में प्रकाशित हुई है। आप रज़ी. के अनेक तफ़सीरी नोट्स भी मिले हैं जिनकी संख्या हज़ारों में है, किसी समय पर ये भी प्रकाशित हो जाएँगे। मुहावरों वाली भाष्य शैली में क़ुर्आन के अनुवाद का बहुत बड़ा काम आप रज़ी. का तफ़सीरे सग़ीर के रूप में ह।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने तफ़सीरे सग़ीर के बारे म एक स्थान पर फ़रमाया- मेरा विचार यह है कि इस समय तक जितने क़ुर्आन करीम के अनुवाद हो चुके हैं उनमें से किसी अनुवाद में भी उर्दू मुहावरे तथा अरबी मुहावारे का इतना ध्यान नहीं रखा गया जितना इसमें रखा गया है। फ़रमाते हैं- गत तेरह सौ वर्षों में बड़े बड़े दलेर युवा हुए हैं किन्तु जो काम अल्लाह तआला ने मुझे पूरा करने का सामर्थ्य प्रदान किया, इसकी उनमें से किसी को भी तौफ़ीक़ नहीं मिली। वास्तव में यह काम ख़ुदा का है और वह जिससे चाहता है करवा लेता है।

फिर एक अन्य स्थान पर आप रज़ी. ने फ़रमाया- अल्लाह तआला की दया और कृपा से क़ुर्आन शरीफ़ का सारा अनुवाद पूरा हो गया अर्थात अलहम्दुलिल्लाह से वन्नास तक तफ़सीरे सग़ीर सहित, जिसके सम्बंध में तफ़सीरे कबीर से तुलना करने पर पता लगा है कि कई विषय संक्षेप में उसमें ऐसे आए हैं कि तफ़सीरे कबीर में भी नहीं।

फिर तफ़सीरुल क़ुर्आन अंग्रेज़ी का भी एक महत्त्व पूर्ण कार्य हुआ जिसे हम फ़ाइव वालियूम कमंट्री कहते हैं। इस तफ़सीर के शुरु में हज़रत मुस्लेह मौऊद के क़लम से लिखी हुई एक अत्यंत विवेक पूर्ण प्रस्तावना भी शामिल है जिसमें अन्य आसमानी ग्रंथों की मौजूदगी में क़ुर्आन मजीद की आवश्यकता तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन तथा क़ुर्आन के संकलन एवं क़ुर्आन की शिक्षाओं पर पूर्णतः अद्वित्तीय तथा रूचिकर शैली में राशनी डाली गई है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने इस प्रस्तावना के अन्त में यह भी लिखा है कि मैं यह भी कह देना चाहता हूँ कि हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल रज़ी. का शिष्य होने के कारण कई विषय मेरी तफ़सीर में अवश्य ऐसे आए हैं जो मैंने उनसे सीखे, इस लिए इस तफ़सीर में हज़रत मसीह मौऊद अलै. की तफ़सीर भी, हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल रज़ी. की तफ़सीर भी, तथा मेरी तफ़सीर भी आ जाएगी और चूँकि ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलै. को अपनी रूह से ममसूह (आत्मा का हाथ सिर पर फेरना) करके इन ज्ञान के भंडारों से सम्मानित फ़रमाया था जो इस ज़माने के लिए अनिवार्य हैं, इस लिए आशा करता हूँ कि यह तफ़सीर

अनेक बीमारों का निदान करने का कारण बन जाएगी, अनेक अंधे इसके माध्यम से आँख पाएँगे, बहरे सुनने लग जाएँगे, गूंगे बोलने लग जाएँगे, लंगड़े तथा अपंग चलने लग जाएँगे और अल्लाह तआला के फ़रिश्ते इसके निबन्धों को बरकत देंगे तथा यह उस उद्देश्य को पूरा करेगी जिस लक्ष्य के लिए प्रकाशित की जा रही है, अल्लाहुम्मा आमीन।

अल्लामा नियाज़ फ़तहपुरी तफ़सीरे कबीर के विषय में कहते हैं- इसमें सन्देह नहीं कि क़ुर्आन के अध्ययन का एक अनोखा दृष्टि कोण आपने पैदा किया तथा यह तफ़सीर अपनी विशेष शैली के अनुसार बिल्कुल पहली तफ़सीर है जिसमें बुद्धि एवं अनुकरण का अति सुन्दर रंग में संयुक्त दिखया गया है।

मौलाना अब्दुल माजिद दर्याबादी ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के देहान्त पर लिखा कि क़ुर्आन व क़ुर्आन के ज्ञान का विश्व्यापी प्रकाशन तथा इस्लाम की सार्वभौम तबलीग़ में जो प्रयत्न उन्होंने तत्पर्ता तथा महान साहस के साथ अपनो लम्बी आयु में जारी रखे, उनका बदला अल्लाह उन्हें अता फ़रमाए।

अख़बार इमरोज़ लाहौर ने तफ़सीरे सग़ीर के विषय में लिखा कि इस समय तफ़सीरे सग़ीरे सम्मुख है, यह तफ़सीर अहमदिया जमाअत के मुख्या अलहाज मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद मरहूम के चिंतन का परिणाम है। क़ुर्आन की मूल अरबी भाषा के उर्दू अनुवाद के साथ कई स्थानों की व्याख्या के लिए पृष्ट के नीचे तफ़सीरी नोट दिए गए हैं। अनुवाद तथा टिप्पणियों की भाषा अत्यंत सरल एवं साधारण है।

साप्ताहिक क़न्दील ने 1966 में लिखा कि तफ़सीरे सग़ीर में अनुवाद तथा पुस्तक के पृष्टों के निचले भाग पर टिप्पिणियों की भाषा साधारण एवं सरल है ताकि प्रत्येक शैक्षिक स्तर का आदमी इससे लाभान्वित हो सके। अनुवाद तथा तफ़सीर में एक व्यवस्था भी है कि पूरी तफ़सीर में गत तफ़सीरों को भी सम्मुख रखा गया है। क़ुर्आन मजीद को इतनी सुन्दरता के साथ प्रकाशित करना इस्लाम की एक महान सेवा है।

फिर अंग्रेज़ी तफ़सीरे क़ुर्आन की दीनी तथा साहित्यिक विशेषताओं ने यूरोप के चोटी के विद्वानों को प्रभावित किया। उन्होंने इसके शानदार रिव्यू लिखे। उदाहरणतः प्रसिद्ध स्कॉलर ए आर बरी कहते हैं कि तफ़सीर के शुरु में एक विस्तृत प्रस्तावना है जो स्वयं मिर्ज़ा महमूद अहमद ने लिखी है। यदि हम इस काम को इस्लाम के रूचिकर अनुसंधान की महान यादगार कह कर पेश करें तो यह कोई अतिश्योक्ति न होगी। इसकी तय्यारी के हर एक पग पर विश्वस्त तफ़सीर की पुस्तकों एवं शब्द कोष तथा पुष्टियुक्त अनुसंधान से लाभ प्राप्त किया गया है। अनुवाद की अंग्रेज़ी भाषा त्रुटि से विशुद्ध तथा अत्यंत समृद्ध है। ग़ैर मुस्लिमों की आपत्तियों का खंडन भी इसमें है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. का इलमी भंडार जो भाषण के रूप में आप रज़ी. ने हमारे सामने रखा, उसे ग़ैरों ने किस तरह देखा इस हवाले से उदाहरणतः आपका एक सम्बोधन 'निज़ामे नौ' के नाम से है। उसके सम्बंध में मिसर के एक स्कॉलर अब्बास महमूद कहते हैं कि यदि यह आवाज़ यूरोप तथा अमरीका के अंग्रेज़ी भाषी वर्ग म फैलाई जाए बल्कि स्वयं अह्ले हिन्द तथा अह्ले पूरब में फ़ैलाई जाए तो निःसन्देह अपना प्रभाव दिखलाएगी।

फिर 'इस्लाम में मतभेद का आरम्भ' आप रज़ी. का एक लैक्चर है, ऐसा ज्ञान वर्धक तथा इस्लाम के इतिहास को अपनी परिधि में रखने वाला लैक्चर था कि बड़े बड़े इतिहासकार भी हुज़ूर रज़ी. के सामने स्वयं को पाठशाला का शिशु समझने लगे। सय्यद अब्दुल क़ादिर साहब प्रोफ़ैसर इस्लामिया कालिज लाहौर कहते हैं कि मेरा विचार है कि ऐसा तर्क पूर्ण निबन्ध इस्लाम के इतिहास में रूचि रखने वाले दोस्तों की नज़र से पहले कभी नहीं गुज़रा होगा।

आप रज़ी. का एक सम्बोधन इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था के विषय में भी था। यह भाषण ढाई घन्टे तक जारी रहा, उच्च शिक्षित वर्ग के हज़ारों लोगों ने इसे सुना। लाला राम चन्द्र मचंद एडवोकेट लाहौर हाई कोर्ट ने कहा कि मुझे इस भाषण से बड़ा लाभ हुआ है, पहले तो मैं यह समझता था और यह मेरी ग़लती थी कि इस्लाम अपने विधान में केवल मुसलमानों का ही ध्यान रखता है परन्तु आज हज़रत इमाम जमाअत अहमदिया के भाषण से पता चला कि इस्लाम समस्त इंसानों में समानता की शिक्षा देता है।

1924 में जब हुज़ूर रज़ी. यूरोप तशरीफ़ ले गए तो रास्ते में अरब देशों में भी निवास किया। इस हवाले से अख़बार 'फ़तहुल अरब' दमिश्क़ ने अपने 10 अगस्त 1924 के संस्करण में लिखा कि ख़लीफ़ः साहब अपनी आयु के चालीसवें साल में हैं। मुंह पर काली दाढ़ी रखते हैं, चेहरा गंदमी रंग का है तथा प्रताप एवं महानता उनके चेहरे से टपकती है, दोनों आँखें प्रतिभा एवं बुद्धि तोक्ष्णता तथा विशेष ज्ञान एवं प्रखर बुद्धि की सूचना देती हैं। आप उनके चेहरे की काया में जबकि वे अपनी बर्फ़ के समान सफ़ेद पगड़ी पहने खड़े हों, ये बौद्धिक गुण देखें तो आपको विश्वास हो जाएगा कि आप एक ऐसे व्यक्ति के सामने हैं कि जो इससे पहले कि आप उसे समझें, वह आपको ख़ूब समझता है। आपके होठों पर मुस्कुराहट खेलती रहती है जो कभी प्रकट तथा कभी अप्रकट हो जाती है, यदि आप इस मुस्कुराहट के नीचे जो भावार्थ तथा जो प्रताप होता है, उसे देखें तो आप चकित रह जाएँगे।

इस प्रकार की असंख्य अभिव्यक्तियाँ हैं, लिखित सामग्रो बहुत सो थो जो जमा करवाइ थो परन्तु समय के अभाव के कारण संक्षेप में पेश किया गया है। जो बातें पेशगोई में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलै. को बताई थीं वे सब की सब हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद साहब रज़ी. के अस्तित्व में पूरी हुईं। आप रज़ी. को अल्लाह तआला ने जो ज्ञान एवं विवेक प्रदान किया था उसका बड़े से बड़ा विद्वान भी मुक़ाबला नहीं कर सकता था। आप रज़ी. का दिया हुआ लिट्रेचर एक जमाअती ख़ज़ाना है, आप रज़ी. के सम्बोधन एवं ख़ुत्बे इत्यादि जो प्रकाशित हैं उन्हें पढ़ना चाहिए। अब अनुवाद का काम भी हो रहा है। अल्लाह तआला हमें इस इलमी ख़ज़ाने से लाभान्वित होने का सामर्थ्य प्रदान करे, आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क करें-9781831652

अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान के विषय में जानकारी के लिए टोल फ्री नम्बर-18001032131